माता का अँचल

गद्यांश

–शिवपूजन सहाय

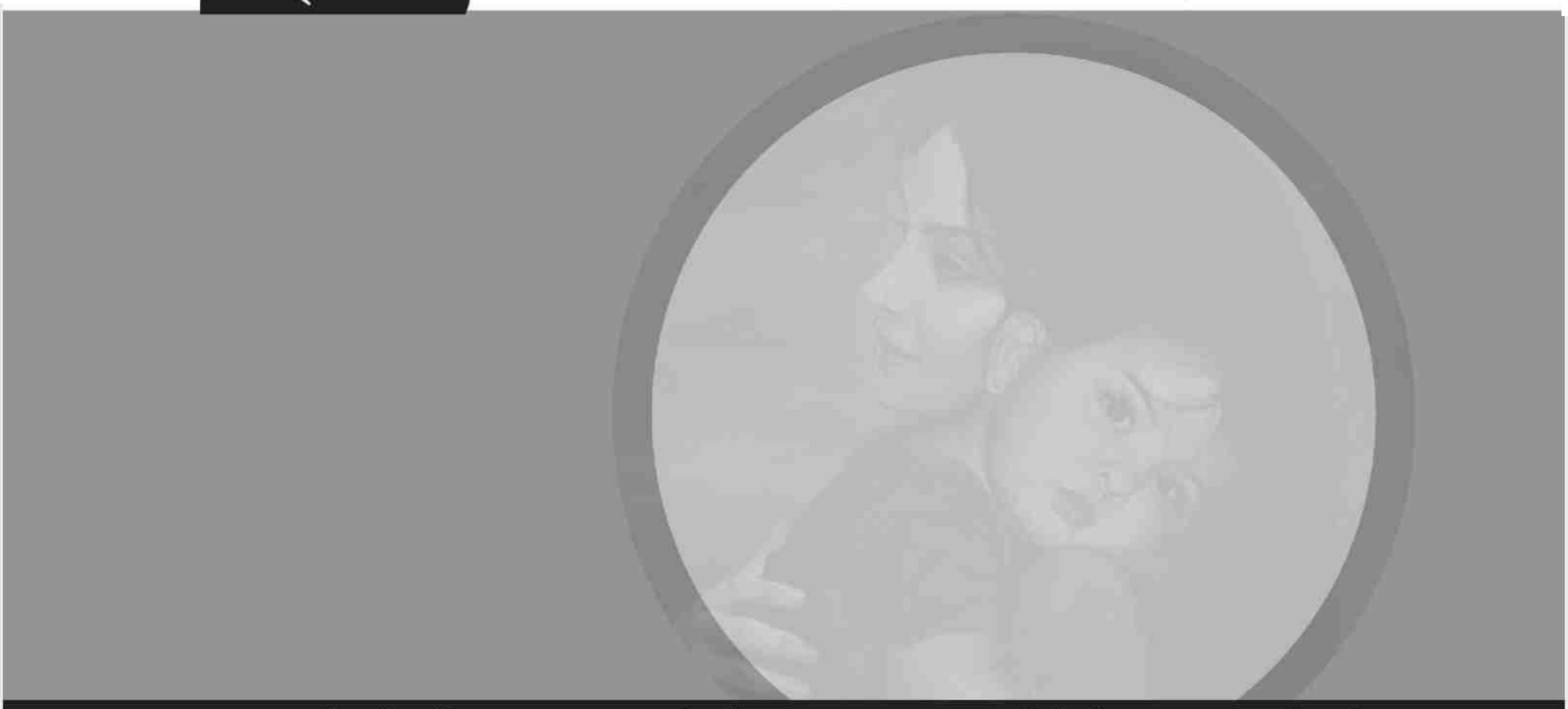

प्रस्तुत पाठ 'देहाती दुनिया' उपन्यास का अंश है। आत्मकथात्मक रूप में लिखे गए इस पाठ में ग्रामीण संस्कृति की झाँकी के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न चरित्रों और बच्चों के बचपन के अनेक रंग उकेरे गए हैं। पाठ में भोलानाथ के माध्यम से बच्चों के प्रति माता–पिता के स्नेह, बच्चों के विभिन्न खेलों आदि का वर्णन किया गया है। साथ ही इसमें यह बताया गया है कि बच्चों का जुड़ाव अपनी माँ से अधिक होता है।

वर्णनात्मक प्रश्न

[2-3 अंक]

(30 — 40 / 50 — 60 शब्द)

1. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं? अपने जीवन से संबंधित कोई घटना लिखिए जिसमें आपने अपने माता-पिता के प्रति प्रेम को अभिव्यक्त किया हो? [CBSE 2017]

उत्तर : बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को विभिन्न प्रकार से व्यक्त करते हैं। माता-पिता से ज़िद्द करना, प्रेमपूर्वक उनकी गोद में बैठकर उनके हाथ से खाना खाने के लिए ज़िद्द करना, पैदल चलते हुए उनकी गोद में आने की ज़िद्द करना, उन्हें अपने साथ खेलने के लिए कहना आदि ऐसी क्रियाएँ हैं जिनके द्वारा बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हैं।

पिछले माह मेरे माता-पिता किसी आवश्यक कार्य से बाहर गए थे। उन्हें शाम को घर आना था। उनकी अनुपस्थिति में मैंने शाम के खाने की पूरी तैयारी की। मैं जानती थी कि मेरे माता-पिता काफी थके हुए होंगे इसलिए उनके आने से पहले ही मैंने अपने माता-पिता के लिए खाना तैयार कर दिया। जब वे घर आए और उन्होंने ये सब देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा और उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

2. 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है? [CBSE 2016]

उत्तर : इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह हमारे बचपन की दुनिया से सर्वथा भिन्न है। जहाँ पहले बच्चों का बचपन सहज और सरल होता था वहीं आज का बचपन कृत्रिमता से युक्त है। पहले के बच्चों में पढ़ाई के लिए किसी भी प्रकार का दबाव नहीं था। वे दिनभर मस्त होकर खेलते-कूदते रहते थे। घर की अनावश्यक वस्तुएँ उनके खिलौने बन जाते थे। उन्हीं से उनका मन बहल जाता था। शाम को खेतों में जाकर उछल-कूद करते थे। हमारा बचपन इससे सर्वथा भिन्न है। शहरी माहौल में रहते हुए हम पूरी तरह से शहरी हो गए हैं। प्राकृतिक वातावरण से हम कोसों दूर हैं। आज हमारे खिलौने मोबाइल, टीवी, कंप्यूटर आदि हैं। घर पर ही इन सबसे खेलते हुए हमारा बचपन बीत रहा है। आज का बचपन कहीं ठहर-सा गया है।

3. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक के बचपन की कैसी तस्वीर उभरती है? [CBSE 2015]

उत्तर : पाठ में लेखक के बचपन की अत्यंत ही मनोहारी झाँकी प्रस्तुत की गई है। लेखक ने बताया है कि वे अपनी माता-पिता की आँखों के तारे थे। उनके पिता अपना अधिकांश समय उनके साथ ही बिताया करते थे। पिता जी उनके साथ मित्रवत व्यवहार करते थे। उनको नहलाने-धुलाने से लेकर खाना खिलाने तक का सारा कार्य पिताजी ही करते थे। माता भी अपना लाड़-प्यार दिखाने का कोई अवसर नहीं जाने देती थी। भोलानाथ को ज़बरदस्ती चिड़ियों के नाम के कौर बनाकर खिलाती थीं। ज़बरदस्ती पकड़कर उनके सिर पर कड़वा तेल लगाकर उनकी चोटी बनाती थी और फूलदार कुरता पहना देती थीं। लेखक का बचपन अपने मित्रों के साथ खेलते-कूदते, तनावरहित, शरारतें करते, मनोविनोद करते बीता। उन्होंने अपने बचपन को भरपूर जिया।

4. बच्चे के पिता बच्चों के खेल में क्यों आ जाते थे? उनके आने पर बच्चे खेल छोड़कर क्यों भाग खड़े होते थे? [CBSE 2014]

उत्तर : बच्चे का अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता का अधिकांश समय उसके साथ ही बीतता था। वे उसके हर खेल को बड़ी ही रुचि और स्नेह से देखते थे। खेल जैसे ही समाप्त होने लगता वैसे ही वे अचानक प्रकट होकर खेल में शामिल हो जाते। ताकि उनके बच्चे का मनोरंजन

जारी रह सके। अपने बच्चे से अधिक लगाव होने के कारण वे ऐसा करते।

उनके आने पर बच्चे खेल छोड़कर भाग खड़े होते क्योंकि वे उनके सामने सहज होकर नहीं खेल पाते थे। इसका अन्य कारण यह भी हो सकता है कि वे अपने मित्रों के साथ पूरी मस्ती से खेलना चाहते थे, किसी बड़े के आने पर वे खुद को असहज महसूस करने लगते थे।

5. पाठ में बच्चे बारात का जुलूस कैसे निकालते थे?

[CBSE 2013]

उत्तर : पाठ में बच्चे बारात का जुलूस बड़े ही रोचक अंदाज़ में निकालते थे। घर की चूहेदानी पालकी बन जाती। उस पर लाल कपड़ा डालकर उसका पर्दा बना दिया जाता। बकरे पर दूल्हे को बैठाकर घर के बाहर के चबूतरे पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक बारात निकाली जाती। लेखक और उनके मित्र ही बाराती बन जाते और वे ही घराती बन जाते। इस प्रकार कनस्तर का बाजा बजाते हुए बड़े ही शान से बारात निकाली जाती।

6. 'माता का अँचल' पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

[CBSE 2012]

उत्तर : पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है, वह वास्तव में हृदयग्राही है। बालक को सवेरे उठाकर नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बिठाना, कंधे पर बिठाकर गंगा तक ले जाना, पेड़ की डालियों पर झूला झुलाना, पिता का साथ में कुश्ती लड़ना आदि दृश्य बड़े ही मनोहारी हैं। ये दृश्य हमें अपने बचपन में ले जाते हैं। इसी प्रकार माँ द्वारा जबरदस्ती खाना खिलाना, नज़र से बचाने के लिए काली बिंदी लगाना, शिशु का शृंगार करना, चोट लगने पर हल्दी पीसकर लगाना आदि दृश्य हमें अपने माता-पिता के वात्सल्यपूर्ण व्यवहार का स्मरण कराते हैं।

7. माता का अँचल' पाठ में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया गया है? आप ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन में क्या अंतर पाते हैं?

8. भोलानाथ तथा उसके साथियों के खेल की सामग्री कैसी थी? वे कौन-कौन से खेल खेलते थे?

[Diksha]

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल की सामग्री प्राकृतिक और घर में प्रयोग होने वाली अनुपयुक्त वस्तुएँ थीं। उनके खेल, तमाशे और नाटक की सभी सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तुएँ ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थीं, जिनसे किसी प्रकार की हानि होने की संभावना नहीं थी। जिन्हें खरीदने के लिए पैसे खर्च करने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। धूल-मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी। न कोई रोक, न कोई डर, न किसी का निर्देशन। वे मिट्टी के घरौंदे बनाते, खेती करते, दुकान लगाते और बारात निकालते। इस प्रकार के खेल उनकी सामूहिक बुद्धि की उपज होते थे।

9. भोलानाथ और उसके साथी खेल-खेल में दावत की योजना किस तरह बनाते थे?

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथी खेलते-खेलते भोजन बनाने की योजना बना लेते। फिर वे सब भोजन बनाने की प्रक्रिया में जुट जाते। घड़े के मुँह का चूल्हा व दीए (दीपक के पात्र) की कड़ाही और पूजा की आचमनी की कलछी बनाते। वे पानी को घी, धूल को आटा, बालू को चीनी बनाकर भोजन बनाते तथा सभी भोजन के लिए पंगत में बैठ जाते। जब वे सब भोजन खाने का उपक्रम करते तो बाबू जी भी आकर पंगत के अंत में बैठ जाते। उनको देखते ही बच्चे हँसते-खिलखिलाते हुए भाग जाते।

10. भोलानाथ और उसके साथी फसल उगाने का खेल कैसे खेलते थे?

उत्तर : खेलते-खेलते भोलानाथ और उसके साथी खेती करने और फसल उगाने की योजना बनाते । चबूतरे के छोर पर घिरनी गाड़कर बाल्टी को कुआँ बना लेते। मूँज की पतली रस्सी से चुक्कड़ बाँधकर गरारी पर चढ़ाकर लटका दिया जाता। दो लड़के बैलों की भाँति मोट खींचने लगते। चबूतरा, खेत, कंकड़, बीज बनता और वे खेती करते। फसल तैयार होने में देर न लगती। वे जल्दी से फसल काटकर पैरों से रौंदकर ओसाई कर लेते।

11. 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बताइए कि माँ अपने बच्चे को किस प्रकार 'कन्हैया' का रूप देती थी?

उत्तर : भोलानाथ जब खाना खाने के बाद अपने साथियों के साथ गली में खेल रहा होता तभी उसकी माँ उसे जबरदस्ती पकड़ लेती और भोलानाथ के लाख ना-नुकर करने पर भी चुल्लूभर कड़वा तेल सिर पर डालकर सराबोर कर देती। उसकी नाभी और ललाट पर काजल की बिंदी लगा देती। बालों में चोटी गूँथकर उसमें फूलदार लट्टू बाँधती और रंगीन कुरता-टोपी पहनाकर 'कन्हैया' बना देती थी।

12. पाठ में आए हुए उन प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों।

उत्तर : पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब एक साँप सब बच्चों के पीछे पड़ जाता है। तब वे बच्चे किस प्रकार गिरते-पड़ते भागते हैं और माँ की गोद में छिपकर सहारा लेते हैं, यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है।। इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष

रूप से बच्चे के पिता का मित्रतापूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

13. भोलानाथ के पिता की दिनचर्या का वर्णन करते हुए पाठ में निहित सन्देश स्पष्ट कीजिए।

14. मूसन तिवारी द्वारा बाल मंडली की शिकायत के बाद पाठशाला में भोलानाथ के साथ कैसा व्यवहार हुआ और उन्हें उनके पिता जी के द्वारा किस प्रकार घर लाया गया?

उत्तर : मूसन तिवारी द्वारा बाल मंडली की शिकायत के बाद मास्टर जी ने पाठशाला से चार लड़कों को भेजकर उन्हें पकड़कर लाने को कहा। बाकी बच्चे तो भाग गए पर भोलानाथ को पकड़ लिया गया और मास्टर जी के पास लाया गया। मास्टर जी ने उसकी खूब खबर ली और उसे घर नहीं जाने दिया। जब बाबूजी के पास यह खबर पहुँची तब वे दौड़े-दौड़े पाठशाला पहुँचे। भोलानाथ का रो-रोकर बुरा हाल था। पिता जी को देखते ही वह उनकी गोद में चला गया। उसे पुचकारकर उन्होंने मास्टर जी से भोलानाथ को छोड़ने की विनती की। मास्टर जी ने दोबारा ऐसी गलती न करने की हिदायत देकर उसे छोड़ दिया और पिताजी के साथ वह अपने घर आ गया।

15. 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर : पाठ का शीर्षक 'माता का अँचल' सर्वथा उपयुक्त है। अपना अधिकांश समय पिता के साथ बिताने पर भी बालक भोलानाथ पर जब संकट आता है, पिता की पुकार का उस पर कोई असर नहीं होता क्योंकि उस समय उसे जिस शांति और सुरक्षा की आवश्यकता थी, वह माँ के आँचल के अतिरिक्त कहीं नहीं मिल सकती थी। इसका अन्य शीर्षक 'बचपन के दिन' भी हो सकता है।

16. साँप को देखते ही बच्चों ने क्या किया?

उत्तर : एक बार जब बच्चे चूहों के बिल में पानी डाल रहे थे तब उसमें से चूहे के स्थान पर साँप निकल आया। उसे देखकर बच्चे डर गए। वे रोते-चिल्लाते बेतहाशा भागे। कोई सीधा गिरा तो कोई औंधा। किसी का सिर फूट गया, किसी के दाँत टूट गए, तो कोई झाड़ियों के काँटों में उलझकर गिर गया। लेखक का शरीर भी जगह-जगह से लहूलुहान हो गया था। वह एक साँस में ही भागते हुए सीधे घर में घुस गया और अपनी माँ की गोद में शरण लेकर ही रुका।

17. भोलानाथ की माँ कब संतुष्ट होती थी?

उत्तर : माँ को बाबूजी के खिलाने का ढंग इसलिए पसंद नहीं था क्योंकि वह चार-चार दाने के कौर भोलानाथ के मुँह में देते थे, इससे भोलानाथ को लगता था कि उसने बहुत खा लिया है और उसका पेट भर गया है। माँ उसे मुँह भर भरकर खिलाती थी। वह थाली में दही-भात सानती और तरह-तरह के पक्षियों के बनावटी नामों के कौर बना-बनाकर उसे खिलाती जाती थी। ऐसा करने पर ही माँ संतुष्ट होती थी।

18. मूसन तिवारी कौन था? उसे किसने चिढ़ाया और दंड किसे मिला?

उत्तर : मूसन तिवारी गाँव के ही एक बुजुर्ग व्यक्ति थे। उन्हें कम दिखाई देता था और वे सीधे नहीं चल पाते थे। बैजू सबसे शैतान था। उसने मूसन तिवारी को चिढ़ाना शुरू किया, 'बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा।' सभी बच्चों ने बैजू के सुर में सुर मिलाकर मूसन तिवारी को चिढ़ाना शुरू कर दिया। जब मूसन तिवारी उनको मारने को दौड़े तो बच्चे भाग गए। वे जब उनकी शिकायत लेकर उनके अध्यापक के पास पहुँचे तो उन्होंने दो लड़कों को भोलानाथ के घर भेजकर उसे पकड़वा लिया। गलती तो यहाँ बैजू की थी पर सजा भोलानाथ को भुगतनी पड़ी।

19. भोलानाथ को उसके पिताजी अपने साथ पूजा में क्यों बिठाते थे?

उत्तर : भोलानाथ के पिताजी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा करना, रामायण पढ़ना, राम नाम लिखना उनके नियम थे। वे चाहते थे कि भोलानाथ में भी बचपन से ही अच्छे संस्कारों की नींव पड़े इसलिए वे उसे सुबह नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बिठाते। हर पिता चाहता है कि उसका बच्चा बचपन से ही ईश्वर के प्रति आस्था रखे। भोलानाथ के पिता भी यही चाहते थे कि उनके बच्चे में भी बचपन से ही ऐसे संस्कार जन्म लें।

20. 'माता का अँचल' पाठ में जिस तत्कालीन पारिवारिक और सामाजिक परिवेश का चित्रण किया गया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

21. मूसन तिवारी का बैजू और उसके साथियों द्वारा मजाक उड़ाने की घटना से आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं?